कादम्बरी कथा में वर्णित प्रकृति सौंदर्य

शोध प्रज्ञा :– पुष्पा कुमारी झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर,दरभंगा,

ग्राम+पो0–अहियारी, थाना–कमतौल, जिला–दरभंगा, पिन–847304

संस्कृत साहित्य में महाकवि बाणभट्ट विरचित 'कादम्बरी' अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

इस ग्रन्थ में वर्णित प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन अत्यन्त मनोहरी है। संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही पर्यावण की सुरक्षा एवं उसके आकर्षक रूप को कवियों ने अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

'कादम्बरी' में वर्णित 'प्रभातवर्णनम्' का मनोहरी रूप का वर्णन–

''एकदा तु प्रभातसन्ध्यारागलोहिते गगनतले, कमलिनी–मधुरक्त–पक्षसम्पुटे वृद्ध हंस इव मन्दाकिनीपुलिनादपर–जलनिधि–तटमवतरति चन्द्रमसि, परिणत–रङ्गरोम–पाण्डुनि व्रजति विशालतामाशा–चक्रवाले गजरुधिर–रक्त– हरिसटालो हिनीभिः प्रतप्त – लाक्षिक – तन्तु–पाटलाभिरायामिनीभिः अशिशिरकिरणदीधितिभिः पद्मरागशलाका सम्मार्जनीभिरिव समुत्सार्य्यमाणे गगनकुट्टिमकुसुमप्रकरे तारागणे, सन्ध्यामु– पासितुमुत्तराशाऽवलम्बिनि मानससरस्तीरमिवावतरति सप्तर्षिमण्डले तटगतविघटित–शुक्ति– सम्पुटविप्रकीर्णमरुणकर प्रेरणाधोगलितमुडुगणमिव मुक्ताफलनिकरमुद्वहति धवलितपुलिनमुदन्वति पूर्वतरे।''[1]

एकबार प्रातःकाल की सन्ध्या की लालिमा से लाल आकाश में कमलिनी के रस से लाल पङ्कोवाले वृद्ध हंस के समान चन्द्रमा के आकशगङ्गा के रेतीले किनारे से पश्चिम समुद्र के तट पर उतरने पर वृद्ध मृगविशेष के लोम के समान दिशा समूह के विशालता को प्राप्त करने पर, हाथी के रुधिर से लाल' सिंह के केसर की समान तपाये गए लाख के तुन्तुओं के समान गुलाबी लम्बी सूर्य–किरणों से मानों पद्मराग रत्न की सलाइयों की झाडू से आकाशरूप फर्श के पुष्पसमूह के समान नक्षत्रगणों के दूर किये जाने पर सन्ध्यावन्दन के लिये उत्तर दिशा में लटके हुए सप्तर्षि मण्डल के मानसरोवर में उतरने पर पश्चिम समुद्र के किनारे पर स्थित फूटी

हुई सीपियों से बिखरे गये मोतियों के दानों को सूर्य की किरणों से नीचे गिराये हुए नक्षत्रसमूह धारण कर रहा है।

संस्कृत साहित्य में प्रकृति वर्णन के सिद्धहस्त महाकवि कालिदास प्रणीत ’रधुवंशमहाकाव्यम्’ का यह श्लोक पर्यावरण सुरक्षा के लिए द्रष्टव्य है–

’पवनस्यानुकूलत्वात प्रार्थनासिद्धिशंसिनः रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैर –स्पृष्टालकवेष्टनौ।।[2]

महाकवि ने वायु को अनुकूला कहा है भावार्थ इसमें निहित है कि वायु शुद्ध और प्रदूषणरहित थी। उन्होंने यह भी पूर्णता दिखाया है कि प्रकृति अनुकूल होने पर मनोरथ निश्चित ही पूरे होते हैं।

कालिदास ने प्रकृति को सर्वदा मानव की सहज संवेदनशील सहचरी के रूप में प्रस्तुत किया है। पुनः प्रकृति के मानवीकृत रूपों का विशद् वर्णन किया है। महर्षि कण्व ने भी शकुन्तलागमन के क्षण पर मार्ग के बाधारहित एवं मङ्गलमय होने की कामना प्रकट की है। यहाँ तो वृक्ष ऋषिकन्याओं के सहोदर भ्राता है। मृग इनके कोमल हाथों से पाले गए हैं। यह कितना विलक्षण दृश्य उपस्थित होता है, जब कोई वृक्ष शकुन्तला को मांगलिक रेशमी वस्त्र का उपहार देता है, तो कोई चरणरंजनोपयोगी अलक्तक रस प्रदान करता है, तो कोई विविध कन्द–मूलादि फल, तो कोई विभिन्न आभूषण लेकर प्रस्तुत होता है–

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं निष्ठयूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्।

अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैः दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोदेभ्देदप्रतिद्वन्द्विभिः।।[3]

प्रकृति का ’मानवीकरण’ करते हुए महाकवि कालिदास ने ’कुमारसम्भवम्’ में निम्न श्लोक द्वारा प्रकृति को मानव का सहायक बनाया है।

राजनीतिमिरावगुण्ठिते पुरमार्गे धनशब्दविक्लवाः। वसतिं प्रिय! कामिनां प्रियास्त्वदृते प्रापयितुं क ईश्वरः।।[4]

वर्षाऋतु में रात्रि के समय गाढ़ान्धकार से व्याप्त मार्गों में बिजली की भयङ्कर कङकड़ाहट से डरनेवाली अभिसारिकाओं का कामुक पुरुषों के पास पहुँचाने में बिजली की प्रकाश ही सहायिका का कार्य करती है।

आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा ने अपनी रचना संग्रह 'लसल्लतिका' में भी नदी–निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुंज एवं वनप्रदेशों का वर्णन किया है–

''हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।

कुसमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया।।

नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्।[5]

उन्होंने महानगरों की यांत्रिक बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन–मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं–

''दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम् शुचि –पर्यावरणम्।

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।।

मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम।

दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्।।[6]

यहाँ भाव यह है कि महानगरों का पर्यावरण दूषित हो चुका है। वह लोगों के रहने योग्य नहीं रह गया है। पृथ्वी, जल, वायु आदि सब कुछ प्रदूषित हो चुका है। कहीं ऐसा न हो कि मानव का पूर्णतः विनाश हो जाए। इससे पहले ही उसे स्वच्छ पर्यावरण में जीवन–यापन करने के लिए प्रकृति को बचाना होगा। नहीं तो आधुनिक युग विनाश की ओर चला जाएगा।

भौतिक स्रोत तथा मानवीय संस्कृति की छवि, जो बनने में हजारों शताब्दियाँ लग जाती हैं। दोनों मिलकर प्राकृतिक दृश्य किसी भी स्थल के लोग तथा वह स्थल दोनों की स्थानीय तथा राष्ट्रीय पहचान को प्रतिबिंबित करते हैं। अतः हमें उन्हें प्रदूषित होने से बचाना है।

हमारे संस्कृत साहित्य में प्रकृति के विकट एवं भीषण दृश्यों का भी वर्णन हुआ है –

''निष्कूजस्तिमिताः क्वचित्क्वचिदपि प्रोच्चण्डसत्त्वस्वनाः स्वेच्छा सुप्तगम्भीरघोरभुजगश्वांसप्रदीप्ताग्नयः।

सीमानः प्रदरोदरेषु विलसत् स्वल्पाम्भसो यास्वयं तृष्यद्भिः प्रतिसूर्यकेरजगरस्वेदद्रवः पीयते।।''[7]

उपरोक्त श्लोक में प्रकृति का यथार्थ चित्रण है। इसमें कृत्रिमता लेशमात्र भी नहीं है।

कादम्बरी में बाणभट्ट ने विन्ध्याटवी का प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम वर्णन किया है। उसे पृथ्वी का मेखला कहा गया है। उस वन को अनेक फूलों एवं फलों से लदे हुए बताया गया है। उसमें कहीं तो कुरर नामक पक्षी मरिच के वृक्षों के कोमल पत्ते नोचकर खा रहे थे, कहीं हाथियों के बच्चे तमाल के पत्तों को तोड़कर मसलकर पृथ्वी पर डाल दिया था जिससे सुगन्ध निकल रहीं थी। उसमें चारों ओर लाल–लाल पल्लवों की छटा छायी हुई थी, मानों ललाई लिये हुए करेली स्त्रियों के कपोल हो या वन विहारणी किसी देवी के चरणों का अलक्तक रस चारों ओर बिखरा है। स्थान–स्थान पर अनेक लता मण्डप सुशोभित थे। स्थान–स्थान पर असंख्य छोटी सरोवर कल्लोल करते दिखायी देते थे। विन्ध्याटवी की उमपा तमाल के नील वृक्षों से नारायण मूर्त्ति से की जा सकती थी। चंचल मृगों का पीछा करते हुए व्याधों से वह अम्बर श्री सुहावनी थी।

''प्रनृत्तनीलकण्ठा पल्लवारुणा च, अमृतमथनवेलेव श्रीद्रुमोपशोभिता वारुणपरिगता च, प्रावृडिव घनश्यामलानेकशतह्रदालङ्कृता च, चन्द्रमूर्तिरिव सततमृक्षसार्थानुगता हरिणाध्यासिता च राज्यस्थितिरिव चमरमृगबालव्यजनोपशोभिता समदगजघटापरिपालिता च, क्वचिन्नारायणमूर्तिरिव तमालनीला, क्वचित्पार्थरथपताकेव कव्याक्रन्ता, क्वचिदम्बर श्रीरिवव्याधानुगम्यमानतरलतारकमृगा, क्वचिद्गृहीतव्रतेव दर्भ चीरजटावल्कलधारिणी।।[8]

प्रकृति वर्णन में महाकवि माघ प्रणीत 'शिशुपालवध' का प्रभात वर्णन अत्यंत मनोरम है–

''अविरतरतलीलायासजातश्रमाणामुपशममुपयान्तं निस्सहेडङ्गेऽङ्नानाम्। पुनरुषसि विविक्तैर्मातरिश्वावचूर्ण्य ज्वलयति मदनाग्निं मालतीनां रजोभिः।[9]

प्रातःकाल की वायु जो अरविन्दों की सुरभि से भ्रमरों को मदमस्त तथा मकरन्दों को सुवासित करता हुआ शनैः शनैः प्रवाहित हो रहा है। यह वायु काम–वासना से मतवाली नायिकाओं के श्रम–बिन्दुओं को दूर करने में दक्ष है।

बाणभट्ट ने अनेक मनोहर कल्पनाओं को प्रकृति चित्रण में अलंकृत शैली द्वारा आकार देकर एक विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न किया है।

कवि की विचित्र कल्पना प्रातःकालीन प्रकाश के स्वाभाविक प्रसार को दिशाओं के स्वाभाविक प्रसार कल्पना में परिणत कर देती हैं जिससे काव्य–सौन्दर्य में निःसन्देह अभिवृद्धि होती है।

संस्कृत भाषा भारत की एक अमूल निधि है। विश्व का आदि–साहित्य होने का इसे गौरव प्राप्त है। सौभाग्य की बात है कि संस्कृत वाङ्मय के महाकवियों यथा–कालिदास, भारवि, माघ, बाणभट्ट आदि ने प्रकृति के सौन्दर्य का सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन से पात्रों की मानसिक दशा के अनुरूप और कथा के वातावरण के अनुकूल प्रकृति के चित्रों का सूक्ष्म चित्रण किया है। महर्षि जाबालि के आश्रम में निकलने वाले चन्द्र की तथा पुण्डरीक के प्रेम में व्याकुल महाश्वेता के विरह के वातावरण में चन्द्रोदय वर्णन उद्दीपन का काम करता है। पुण्डरीक के प्रेम में व्याकुल महाश्वेता चन्द्रोदय को देखकर और अधिक व्याकुलता का अनुभव करती है। चन्द्रापीड और कादम्बरी के प्रेम को दृढ़ बनाने में बाणभट्ट ने प्रकृति के सन्ध्या वर्णन और चन्द्रोदय वर्णन को आलम्बन रूप में ग्रहण किया है। इस प्रकार बाणभट्ट ने प्रकृति के आलम्बन व उद्दीपन दोनों रूपों का सफलतापूर्वक चित्रण किया है।

बाणभट्ट ने अपने पूर्ववर्ती कवियों यथा वाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि के समान प्रकृति को आलम्बन रूप में चित्रित किया है और कहीं भी चित्र औचित्य का उल्लंघन नहीं किया है। फिर भी बाणभट्ट के प्रकृति–चित्रों में समीक्षकों को स्वाभविकता की न्यूनता दीख पड़ती है। इसका कारण है बाणभट्ट का अलंकारप्रिय होना। उनकी अपनी शैली अलंकृत शैली

है, अतः वे हर वस्तु को अलङ्कृत शैली में उकेर कर प्रकृति–चित्र को अस्वाभाविक होते हुए भी स्वाभाविक रमणीयता का ह्रास न कर दुगुनी श्रीवृद्धि ही करते है। ऐसी मनोहारी रमणीय चारुता अन्यत्र दुर्लभ है। बाणभट्ट ने प्रकृति के सुन्दर और असुन्दर, कोमल और कठोर दोनों रूपों को चित्रित करके अपना स्वाभाविक प्रकृति – प्रेम अभिव्यक्त किया है। इनके प्रकृति चित्रण की छटा सर्वत्र अलंकृत होने के कारण अतीव रमणीय पुष्पगुच्छ की भाँति प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कादम्बरी आचार्य शेषराजशर्मा 'रेग्मी' पृ0 सं0–78,79
2. महाकविकालिदास प्रणीतम् रघुवंशमहाकाव्यम्, व्याख्याकारः डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी, पृ0 सं0–54, श्लोक संख्या–42
3. महाकवि कालिदासप्रणीत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'
4. कुमारसम्भवम्, डॉ0 श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी पृ0 सं0–10 श्लोक सं0–11
5. हरिदत्त शर्मा, लसल्लतिका 'शुचिपर्यावरणम्' श्लोक संख्या–05
6. 'शेमुषी' (द्वितीय भागः) संकलित 'शुचिपर्यावरणम्', हरिदत्त शर्मा।
7. भवभूतिप्रणीतं उत्तररामचरितम् 2/16
8. कादम्बरी, विन्ध्याटवीवर्णनम् पाण्डेय रामतेजशास्त्री, पृ0 सं0–40–41
9. शिशुपालवधम्, महाकवि माघ प्रणीतं पृ0–18